८१

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ५३६९-घ

Title सारस्वत प्रक्रिया टीकाहिन्द्याम्

Author अनुभूतिस्वरूपाचार्यः

Extent ५१ **Age**

Subject व्याकरणम् - संपूर्णम्



नं० ५२८ ६-घ

नं० २९ क

सारस्वत प्रक्रिया

व्याकरण

नं० ५३६ ६-घ

(व्याकरणम्) सारस्वतप्राक्रिया टीका २१

पत्राणि ५१ (संपूर्णम्)

मूलकर्त्ता-अनुभूतिस्वरूपाचार्य:

मूल कर्ता-अनुभूतिस्वरूपाचार्य:

5379

I 1 to 20.

II 1 to 21.

III 1 to 10.

F.= 51.

Complete.

सा॰
भा॰
१

ॐश्रीगणेशायनमः श्रीसरस्वत्यैन
मः कवित्त चारोवर्णराजा महा
राजरणवीरसिंह आज्ञादीनीजिरया
र भाषाकोंप्रहत्तहूं आत्माकोंप्रण
मकीये बालवुद्धिवृद्धिलीये वाणे



ॐप्रणम्य परमात्मानं बा
लधीवृद्धिसिद्धये सार
स्वती मृजुं कुर्वे प्रक्रियां
नातिविस्तराम् १ इ
न्द्रादयोपियस्यांतं नय
युः शब्दवारिधेः प्रक्रि
यांतस्यकृत्स्नस्य क्षमो
वक्तुंनरः कथम् ॥

केरी प्रक्रिया सोसुधीभी सुधी कहे
इन्द्र चन्द्र आदीजोंको अंतनहिंपावें
सु आपरशाहसिंध नाइसारेकोकै
सेतहे सोसरस्वतीप्रणीत थोहडी
प्रक्रियाजमीन अनुभूती मनभी

करोगायथामतिहं तत्रतावत्सं
ज्ञासंव्यवहारायसंगृह्यते सोप
हिले सारस्वती प्रक्रियामें शास्त्रमें प्र
वृत्ति वास्ते मैंनें संज्ञा कहीं करीदी
हय अइउऋऌ समानाः
अ इ उ ऋ ऌ इनकी समान संज्ञाहै
इन सभके उच्चारण वेले इक्को जैसा
काल लगताहै इसतें इनकी संज्ञा
समानहै अनेन प्रत्याहार ग्रहण
य वर्णाः परिगण्यंते तेषां समानसं
ज्ञाच विधीयते इस सूत्र कर्के प्र
[illegible] त्याहार बनाए वास्ते
अक्षर गिणीदे हैंन अर इन अक्षरों
की समान संज्ञाभी इसी सूत्रकर्केहै
दोकार्य सिद्धहो एस सूत्रकर्के
नैतेषु सूत्रेषु संधि रत्रसंधेयो,विवा
क्षितत्वात् विवक्षित स्त संधि भव
तीतिनियमात् ए जो कहिया और

सा· भा· २

2

कहिणेहैं सब इन्हों विषय संधि नहिं
करणी चाहिये किउं कि अविवक्षितता
त्व इन्होंको संधि विवक्षित नहि कहिणे
वाली जो सरस्वतीहै उसकी इच्छा न
थी इस जगासंधि करणेकी इसवास्ते
इन्में संधि अविवक्षितहै जहां कहि
णेवाली केइच्छा संधि करण विषे
होवे उहां विवक्षित होताहै विवक्षि
तहो तो संधिहो पर नेम है इस नेम
नें लौकिक प्रयोग निष्पत्तये सम
य मात्रवाच अते व्याकरणके प्र
योगोंकी सिद्धि वास्ते संकेत इक र
क्षिताहै इसतेंभी संधि नहिं हुआ
ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेदाः सवर्णाः
एतेषां ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेदाः परस्परं
सवर्णा भण्यन्ते इन अ इ उ ऋ
लृ वर्णोंके ह्रस्व दीर्घ प्लुत पर जो
भेदहैं सो आपसमें सवर्ण कही

देने लोकाच्छेषस्य सिद्धि रिति व
क्ष्यति सारस्वती ग्रंथके अंतविषय
कहेगी के जो संज्ञा वा प्रयोगादि मे
रे कहिणेथी रहि गियाहो तो उसकी
सिद्धि और व्याकरणते जानलेणी
ततो लोककत एव ह्रस्वादि संज्ञा
ज्ञातव्या तब फिर सारस्वती सूत्र में
ह्रस्वादिक संज्ञा नहीं है सो और व्याक
रणतें जानणी चाहे एकमात्रो ह्र
स्वः द्विमात्रो दीर्घः त्रिमात्रः प्लुतः व्य
ञ्जनं चार्द्धमात्रकम् जिसके उच्चा
रण वेले एकमात्रा हो सो ह्रस्व होता
हय जैसे अजः विसः अज विसको
कहिते हैं इस जगा अवर्णकी एक
मात्रा है सो अवर्ण ह्रस्व है जिसके
उच्चारण समय दोमात्रा होवें सो दी
र्घ जैसे आज्ञा हुकमको कहितेहैं
इस जगा आवर्णकी दोमात्राहैं सो

सा॰ भा॰ ३

आवर्ण दीर्घहै अर जिसके उच्चारण
वेले त्रयमात्रा हो सो ऊर्ध्व होता हय प्लुत
जैसे आ एवं किल तत् आह दीक ३
से तरांहै इस जगा आवर्णकी प्लुत
संज्ञाहै अर जिसके उच्चारण वेले अ
र्द्धमात्राहो सो व्यंजन होताहय जैसे
रामं पश्य यज्ञधरम् इसजगा जो यज्ञ
धरम् का मकारहै इसकी अर्द्धी मात्रा
हय सो व्यंजनहै एषां सर्वे षुदा
त्तादि भेदा सन्ति इनके अ इ उ ऋ
लृ वर्णोंके औरभी उदात्तते लयकर्के
कैयी भेदहै जैसे उच्चै रुपलभ्यमा
न उदात्तः नीचै रनुदात्तः समहृत्या
स्वरितः सानुनासिको निरनुनासि
कश्च ऊचेस्वरसें जो बोले सो उदा
त नीचें स्वरसें जो बोले सो अनुदात्त
रको जैसे स्वरसें जो बोले सो स्वरित
अर्द्धी विंड जिसके ऊपर बोले सो सा

3

नुनासिक होताहै अते जो नासिका वी
च नबोलो सो निरनुनासिक होताहय
ए ऐ ओ औ सन्ध्यक्षराणि ए
ऐ ओ औ इन्कों सन्ध्यक्षर कहितेहैं सं
धि नाम गंढनेका हय सो एह चारो
अक्षर दो दो स्वरों गंढके बने हुयेहैं
अ इका एहै बनिया हुया अ एका ऐ
है बनिया हुआ अ उ ओ हुया अ ओ औ
हय एषां ह्रस्वा न सन्ति इन
चारोंके बीच ह्रस्व कोइभी नहींहै जो
दीर्घहैं जो प्लुतहैं उभये स्वराः
समान अर संध्यक्षर इन दोनोंकों
स्वर जानों अकारादयः पंच चत्वा
रएकारादय श्च उभये स्वरा उच्यंते
अकारसें लयके पंज अ इ उ ऋ ऌ
अर एकारसें लयके चार ए ऐ ओ औ
इन दोनस्वरोंके अक्षरोंकी अर्थात अ
इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ इन्कों नवों अक्ष

(margin) इवेंगिरमेल १ मेलनेसे ६

सा· भा· ४

यांको स्वर संज्ञा है जहां स्वर नाम आवे
तो इनको समझना चाहिये   अवर्णा
नामिनः अवर्णवर्जाः स्वराः नामिन
उच्यंते   अवर्णते विना जो स्वर हैं अ
र्थात् इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ आठ अक्षर
इनको नामी कहीदा है   अनको
ता लाव स्वराः   ग्रंथकर्त्ता
समाहार बनवानेकी इच्छावास्ते जो
बालकोंको समाहार बनानेकी टक्का
ल आजावे इसवास्ते व्यंजनभी अनुक्रम
करके कहिंदा है   हयवरल ञणन
ङम झढधघभ जडदगब खफछ
ठथ चटतकप शषसः आद्यंताभ्या
म् समाहारं जिहलता आद्यंताभ्या
मेते वर्णा याह्याः   जिसने स
माहर बनाना होवे सो स्वरोंभी पूर्व
जोडकरके एक अक्षर आदिका लेलवे
अर इक अंतदा जोडकरके इन्हां अक्ष

त्याहार जिया
थिष्य याव्य
नान्यनुक्रा
नि· तथा

रोंको ग्रहणकरे आदिरन्त्येन सह
इत्यस्यमाणस्तन्नाम प्रत्याहारः आ
दिका अक्षर पुन अंतके अक्षरके आगे
जेंड कर दो अक्षर हुये सो एक प्रत्या
हार बनगिया तथाहि सोजीक
र अकारो वकारेण सह इत्य
माणोऽव प्रत्याहारः अकार वका
रदे एर्वजोडिये तो अव प्रत्याहार ब
नगिया सचोऽव्यते सो बना
केभी दसनेहैं अइउऋलृ एऐओ
औ हयवरल ञमणनङम कढधघ
भ जडदगब इति अव प्रत्याहारः तावत्संख्याक
पहजो अंते लयककेव पर्यंत इन सम्पद्यते
मी अक्षरहैं इन सभका नाम अवहै
अर्थात अव प्रत्याहारहै जडदग
ब इति जब प्रत्याहारः पर जब प्र
त्याहारहै कढधघभ इति कभ प्र
त्याहारः पर कभ प्रत्याहारहै

सा॰
भा॰
५

वटतकप इति चय प्रत्याहारः पर
वय शहारहै एवं यत्र यत्र येन
येन प्रत्याहारेण कृत्यं स स तत्र तत्र
ग्राह्यः इसीतरां जिस जिस जग्गा
में प्रत्याहारसे मतलब होवे सोसो प्र
त्याहार उस उस जग्गामें लेलेना
संख्यानियमस्तु नास्ति प्रत्याहारों
की गिनतीका कुछ नेम नहींहै गिने
भी जातेहैं पुन नहींभी गिणेजाते
हला व्यंजनानि हकारादयः सका
रान्तावर्णा हला व्यञ्जनानि भवन्ति
हकारते लयकर्के सकारपर्य
न्त जो हल प्रत्याहारहै नाम जिन्कादा
उन्का व्यंजन नामहै स्वरहीनं व्यं
जनम् व्यंजनका का लक्षणहै जो
स्वरते विना होना अर्थात् व्यंजनमें
स्वरनहींहोता कोई कहे भलाजी त
सां तो कहियासी जो पशप रामे या

त्तुर्थरम् इस वाक्यके अंतका जो
म् हय सो व्यंजनहै तथा व्यंजन
की अर्द्धी मात्रा होती हय अर उस
में स्वर नहीं होता तो इन सभमें
तो स्वरहै तो कहिएगा जो नेष
ऽकारः सुखोच्चारणार्थत्वादित संज्ञ
कः इनहरसोंमें जो अकारहै
सो सुखोले उच्चारण वास्ते रखिया
है ओ तो इतहै चेला किस सूत्रक
कें इतहै गुरुः कार्याय ऽत्
प्रत्ययाद्युतिरिक्तः कस्मै चित्कार्यायो
ऽच्चार्यमाणोवर्णो इत् संज्ञको भव
ति प्रत्यय आदिकोंका जो न
हो अर किसी थोडे कामवास्ते बो
लियाजाता जो अक्षरहै सो इत् संज्ञा
वाला होताहै जैसे खेलविचों च
उ निकाल लय्ये तो फिरका स
खेणी खेलसे प्रयोजनहै

सा॰
भा॰
९

यस्य संज्ञा तस्य लोपः जिसकी
इत् संज्ञाहै उसका लोप होजाताहै
वर्णादर्शनं लोपः वर्णको
छोड़देणेंको लोप कहिंदे हैन
वर्णविरोधो लोपश्च अक्षर से
जो विरोधहै उसको लोपश्च कहिते
हैं मित्रवदा ऽऽगमः आगम
जो है सो मित्र जैसा होताहै जिन
अक्षरों पास आगम आवे इन्कोंभी
कछु गुण होजाताहै शत्रुवदा
ऽऽदेशः आदेश जोहै सो शत्रुकी
तरया पर होताहै जैसे एक आदमी
का डेहरा खोसकर उसको उठा दे
विये आउसके स्थान कोई औरश
बस बिठा देविये इसी तरह एक
अक्षरको छाकर जो दूसरा उसकी
जग्गा लिखदेणाहै सो उसको आदे
श कहितेहैं स्थानंतरिता ह

6

सा॰ संयोगः स्वरोंका अंतराल नही हैं जिन्हू वर्ड्ते ह्रमोंमे उनकों संयोग कहितेहै जैसे ट्य्यानय इस जग्गामें द्‌ थ्‌ य्‌ इनतीनोंका जो मेलनाहै इस कों संयोग कहितेहैं क चु टु त पु वर्गाः पंजा पंजा अक्षराके आदि आदिको एक एक अक्षर लेके इनका नाम वर्ग बनायाहै उकारः पंच वर्गा परिग्रहणार्थः इनमें जोउका रहै सो पांचोंवर्गोंके लेणे वास्ते इक संकेत रक्खियाहै जैसे कुदे ग्रहण कोसों कखगघङ इन्हां पंजोंदा ग्रह ण होताहै अते सो स्वभिन्नः इससूत्रमें चु इस करके चछजझञ कोंभी लयलेंगे इसी तन्हां सभ जग्गा में जानणा अदेदो नामिनो गुणाः अर एत ओत नामिनः स्थाने गुणसं ज्ञका भवंति अर एत ओत एन्हां

नामियोंके स्थान विषे जो आदेश है
इनको गुण संज्ञा है जैसे इ उ ऋ ऌ
ए चार नामि हैं अ इ मिल कर्के ए
जो आदेश है इसकी गुणसंज्ञा है अ
ते जैसे सीतेशः रामः सीताका ईश
स्वामी है राम इस जगा सीता ईशः
ऐसा कहिणा चाहे सो जो आ और
ईका ए बना दिआ है इसकी गुणसंज्ञा
है इसी तरां रामर्द्धिः रामकी जो ब
र्कतहो सो राम ऋद्धिः रामके पिछ
ली अकार ऋद्धिकी ऋ इन्दोनों को जो
अर होगिया इसको गुण कहिते हैं
फिर इसी तरां रामोढा रामचंद्रजी
को वेल है सो इस जगा राम उढा उ
की गुणसंज्ञा है आरैऔ वृद्धिः
आ आर् ऐ औ एते वृद्धिसंज्ञका भवंति
आ आर ऐ औ एह चारो नामि
योंके स्थानमें जो आदेश हैं इन्को वृ

हि कहीदाहै   अंत्यस्वरादिष्टिः
अंत्योचःस्वर स्तदादि वर्णो टि संज्ञको
भवति   पद विषे अंतका का स
मन्न पिछला जो स्वरहै और अते उस
दे नाल परला जो व्यंजनहै इन दुहां
कीटि संज्ञा टि नामहै जैसे मनस
इस जग्गा न में जो अहै सो अंतका
स्वरहै अते परला स जहै इन्हों दोनोंकी
टि संज्ञाहै अते जिस जग्गा परे हस
कोई नहोवे अंतको स्वरको तब उस
अंतके स्वरकोंही टि संज्ञा होतीहै
जैसे कर्क इस जग्गामें कामे जो अ
है इसकोंही टि संज्ञाहै   असंयो
गादिपरो ह्रस्वो लघुः   जिस अ
क्षर तें परे संयोग अते विसर्ग अते
बिंदु न होवें उसको अते जो ह्रस्व
है उसकी लघु संज्ञाहैं जैसे राम
माता यशस्विनी इस जग्गामें राम

सा॰
भा॰
८

8

का न्न मकारहै इसकी लघु संज्ञाहै
रामचंद्रजीकी जो माताहै सो यशवा
तीहै   विसर्गानुस्वारसंयोगपरो दी
र्घश्च गुरुः   जिस अक्षरके परे विस
र्ग अनुस्वार संयोग परह जय निमित्त वषो
वकव होवें अते जो दीर्घहै इनसभको
गुरु संज्ञाहै जैसे रामं पश्य रमानाथं
रामः स्वपिति निर्जने देख रामचंद्रजी
कों जो लक्ष्मीके खावंदहै अबकैसे प
कले वनमें सोतेहैं इस जगा रा दीर्घ
में परे अनुस्वार प परे संयोगमः परे
विसर्ग इनसभ चारोंकी गुरुसंज्ञाहै
मुखनासिको ऽनुनासिकः मुखनासि
काभ्यां मुच्चार्यमाणो वर्णो ऽनुनासि
क संज्ञको भवति   मुख अते नासि
का बीच जो बोले अक्षर उसकी अनु
नासिक संज्ञाहै जैसे राम सेवापरो
नित्यं हनुमांश्च विभीषणः रामचंद्रजू

की वाकरीमें नैनाथहैं सदा हनुमा
न अते विभीषण दोनो इस जगा
हनुमो जो मैं कारहै सो नासिका
अते मलेकर्के बोलताहै इसकी अनु
नासिक संज्ञाहै वर्णग्रहणे स
वर्णग्रहणं कारग्रहणे केवलग्रह
णे नपरकरणं नावन्मात्रार्थम्
जिस अक्षरदे परे वर्णबोले ओस्थे स
वर्णदावी ग्रहण होताहै जैसे अव
र्णान्यासस्य विसर्जनीयस्य लोपश्च भ
वस्य वेपरे क इह इस्थेभी अते देवा
आ अवर्णदा ग्रहणकन्या अआदा
भी ग्रहणहो जिसदेपरेकार अतेत्
उस अकलेदाई ग्रहण ईत् ऊत् इस्थे
कसन अते इकार उकार इस्थे दीर्घ
न लैणो

इति संज्ञा प्रक्रिया

संज्ञा कही करणो समासहुई
अथना सरसंधिरभिधीयते

सा॰
भा॰
२

9

अब स्वरसंधि कहितेहां अर्थात् स्वर
कों अगले अक्षरनाल [illegible] मेलना
इ ये स्वरे इवर्णो यत्व मापद्यते स्व
रे परे   स्वरपरे ड्यो इ ई कों
छाकर्के य बनाटेना दधि आनय
जा था तो इकों य कीया तो पहिले
दध्य आनय बनियां   हसे ऽर्हे
सः स्वरात्परो रेफ हकार वर्जितो ह
सो हसे परे द्वि र्भवति   स्वरतें परे
न रहतें विना हसहै उसके दो ब
नाटेणा हसप्रत्याहार परे ड्यो स्वरतें
विना जो अक्षरहै उसनू हस कहि
दाहै   इति धकारस्य द्वित्वम्
इसतरा धकारकों दोकीते दध्ध
य आनय बनिया   झभे जबाः
झसानां झभे परे जबा भवन्ति
झसांको झढधघभ जडदगब खफ
छठथ चटतकप शषस इनकों

कठधद्यभ परे इयों जडदगब हो
वे इति पूर्व थकारस्य दकारः
पसो पहिले थकों द् होया
सवर्णत्वात् थकारका दकारही
सवर्णसी इसकर्के वर्गो वर्गे
ण सवर्ण इतिवचनात् अपने
वर्गदा अक्षर अपने वर्गदे अक्षर
नाल सवर्ण होताहै तथ्यदथन इ
सवर्गमेंभी दकारही अते जवोवि
अभि दकारहीआया यथा सं
लंबा वक्तव्यम् नहितो कठ
धद्यभ पंजान् जडदगव गिनीवा
रनाल बेशक्क कईता तोभी दईह्
आ तो सिद्ध होई गिया स्वरही
नं परेण संयोज्यं स्वरतें विनाजो
अक्षरहो सो परलेकेसाथ जोडी दे
णा चाहेए दध्मानय दध्मा
नय वगनने शिवजी पार्वतीकों

सा॰
भा॰
९

वा कोई पुरुष अपनी लाडीकी
कहिताहै किदही लैआ गौरी अत्र
ईकोंभी यकार होईगिया इसे
ईसः कर्के रना हित होया पर
रा यपो हि: सापूर्वोरेफात्परो यपो
र्द्विर्भवति सारैह पूर्व जिसके
पसा जो व्यंजन रकार है उसतें प
ली यप यवरल ञमनङण झढ
धघभ जडदगब खफछठथ चट
तकप द्वितहोजान गोर्‌य्यू अत्र
पसावनियो सारहीनं जलतुंबि
का न्यायेन रेफस्यो ईगमनं
जैसे जलमैं तुंबी सटिये तो ऊपर
कोंही आतीहै उसथों हेठ नंही ज
नेंदा इसी तर्ह्‌ रकार यकारके
उपर चढीगिया गोर्य्यत्र सिद्धभया
गौरीजी इस जगामैं हैं रेफकाभी
स्वभाव भले पुरुषकीन्याईहै जैसे

पैरैर्गतो यः शिरसा वर्थार्थते समाग
तेसम्मनिनामनस्रः प्रापः परैशां हिर
णात्व मीहते स्कारतल्पप्रकृति र्महा
त्मा १ भलालोक किसीके घर हुर
के जावे तो उसको अगले लोक सिर
ते चुक्कलेंदेहेन अते उसदे घर को
ई आवे तो जरूर उदेपैं चंबुीके
उसंी सिरते चुक्की लेंदाहै अते जि
सदे घरजांदाहै उसनं हणकीता वां
डाहै बहुतककें रकारका जेसाहै
सभाव जिस महात्माका रकारभी जि
स प्रकारके घरजावे उसके ऊपर च
ढबेठदाहै अते उसनू छिनकदीहै
अतेर सिरपर चढके छिन कैसे क
र्दीहै जैसे अवथार्थतेमेंहै चांणी लग
कर सिरपर कैसे चुकदाहै जैसे नत्र
में सार रस उनवर्तते अगे उ
वे चरते आदिस्थानमेंभी सारकी अत

सा॰
भा॰
११

इति कारणों के इतिनाल सारे परेभी
पढना एव ऽस्मात्रापि यत्र यत्र
न स्यातौ: कार्य्य सिद्धि सत्र सर्वांत
ग सदाउइति शोतया ग्रन्थमूयस्त्व
भयात्रास्माभिर्लिख्यते एसी तरां
होरभी जहां सत्रके प्रतारों साथ कार्य
सिद्धि नहो तहां तहां और सत्रसें पद
की प्रवृत्ति करलेणी ग्रंथवडा होजा
नेके भयतें असांने नंही वडता लिखि
या उवम् उ वर्णो वन मापद्यते
सारे परे सापरेडुयो उ ऊको व
कार होजावे मधुअत्र मधत्र
इस्य माती है ऋरं रुवर्णो रन
मापद्यते सारे परे सापरेडुयो ऋ
ऋ को रकार होजावे पितृअर्थः
पित्रर्थः पित्रर्थेमस्क राज्यो वचर
ट त्यवनमिति पिता दशरथको सच्ची
प्रतिज्ञा करणवास्ते राजको छोडके

वनविषे विचरदे होये जयहो श्रीरा
मचंद्र जीकी लले लवर्णो लव
मापद्यते स्वरे परे स्वरपरेहूंद्यां
लल्को लकारहोवे लश्रुतवं
धः लवबंधः लश्तहय पश्च
य एकारोऽयभवतिस्वरेपरे प
मायं श्रय होवे स्वरपरेहूंद्यां नेश्र
यनम् नयनम् नेत्रकानामहै
ऐश्राय ऐकारो श्राय् भवति स्वरेप
रे ऐकों श्राय् हो स्वरपरे हूंद्यां
नैश्रकः नायकः चंगा पु
रुषश्रोह ओश्रव् ओकार श्रव् भ
वति स्वरे परे ओकार श्रव् होवे
स्वरपरेहूंद्यां भोश्रति भवति
एकको जनानेवाला क्रियापद
गवादे स्वर्णोगमो लादौ व
क्तव्यः गो श्रादिक जो क
ई शब्दहैं उनको श्रलादिक करणा
औश्राव् औकारोश्राव् भवतिस्वरेपरे औ रह नाविह

सा॰
भा
१२

इ परहोंदियों अवर्णोका आगम आवे
गो अतः बीच अवर्णोका आगम आया
गो अ अतः वनियों गेअवु सवर्णोदी
र्घः सर गवाक्षः करोधा इसे
तर्क्षों गोऽद्रः अश्व गवें
द्रः गोपाल गोअजिनं गा
वाजिनं प्रकृत्या प्रोक्तः क्ओ ओओ
ओ कृष्ण सेईयिलो सेयिलो अइ एएपे
पे फाँकशा जिनानी सईंडे सेडं थंटी
अलङ्गरिलो अहोरिलो सेना
के विस्तारवान् यकारः किते किते
सर समय कारनें जानणा यथा
जैसे गोअग्नि इस्ये य
कार कोंहो सर मनके ओ अयु कोगि
या गव्यूति अधपरिमाणे
दो कोस का नाम अमवगावों
मिश्रीभावे इसनें विना जिस्ये
वगाकानाम उस्ये यकार न सर जै

12

सा मननणो तो गोघ्नति: व
गोकानाम ओग्रव् न होया ओग्रा
व् ओकार ग्राव् भवति स्वरे परे
स्वर परे होम्मो ओकों ग्राव् हो जावें
योग्रकः यावकः जवांदा कोटा
योर्लोपश्चवापदांते पदान्तस्थि
तानामयादीनां यकार वकार योर्लो
पश्च वाभवति जे कर पदांत के
ए ऐ ओ औ नं अय् आय् अव आव्
आदेश होन तदय् कार तथा वकार
का लोपश्च होजावे विकल्प करके
ते आगताः ते पदांतको
ए है पश्चय् म् कारका लोपश्च
लोपश्च पुनर्नसंधिः तयागताः
तया गताः सो आये हयें
तस्मै पतन पेग्राध् तस्मा प
तन तस्मा येतन पटोइह पटइह
पट विह तोइमौ ताइमौ ताविमो

सा॰
भा॰
१२

13

लोपश्चिवनर्नसंधिश्छंदसितभवति
लोपश्च करकै संधि नहिं होती जह्रा प
र वेद विषे होजावे हेसवे इति हे
सवेइति अरप हेसवेति पदो
तोतः पदान्तेस्थिता देकारा दोकाराच्च
परस्या कारस्य लोपोभवति
पदांत विषे स्थित जो एकार तथा ओ
कार तिसतें परे अकारका लोपहोवे
तेऽत्र तेत्र पदोऽत्र पदोत्र सोऽस्यहैं
हे विद्यार्थी इसी जगाहैं सवर्णे
दीर्घःसह सवर्णस्यसवर्णेपरेसहदी
र्घोभवति सवर्ण स्वरको सवर्ण
स्वर परे हुयां दोनोंको रलाके अर्थात्
एकी उली दोनो स्वरको दीर्घ कर दे
णा ओर ह्रस्व परे दीर्घ तोभी दीर्घकर
णा ओर दीर्घ परे दीर्घ तोभी दीर्घ
दोतर्फ दीर्घहो तोभी दीर्घ दो तर्फी
ह्रस्व तो भी दीर्घ अत्राघत्र अत्रा

र इस जगा अड्डाहै दधिइह

दधीह दहीभीहै इस्ये भानु

उदयः भानूदयः सूर्यका उदय

होना पितृऋणं पितृणं

पितरोंका उधार सामान्यशास्त्र

तो न्नं विशेषो बलवान् भवेत्

सामान्य शास्त्रतें विशेष शास्त्र बली

होताहै परेण पूर्व बाधोवा प्राय

शो दृष्यता मिह अगले सूत्रादि

कसें पिछलेकी बाधा पसाही प्रका

र इस शास्त्रमें हय जैसे इयं स्वरे का

सवर्णे दीर्घः सह करके बाधाहै इयंस्व

रे सामान्य सवर्णे दीर्घः सह विशेष

है इसी तर्है भानू दयः में उवंसा म

न्य पितृणंमें ऋरं सामान्यहै

अइए अवर्ण इवर्णेपरे सहए भवति

अवर्ण इवर्णके परेहुयां पर्ले

इ वर्णके साथ ए हो जाताहै अर्थात्

सा·
भा·
१८

अइ को रलोके प करदेगा तवइ
दं तवेदं पह तेराहै ममइदं म
मेदं पह मेराहै हलादेरी
षादेरोलोपो वक्तव्यः हलादिक
कथ्योंकी टीका लोपहो ईषादिक
कथ्यों शब्दोंके परे इष्यों हलईषा
ल में अ दि उसकालोप हली
षा हेलका फाला लांगल
ईषा लांगलीषा लांगलभी हल
कों कहितेहैं उसकी ईषा फाला
मनस ईषा नमें अ अंतेस
दोनोंकी टिसंज्ञा लोप मनीषा
वृद्धि शकअंधुः शकंधुः
झ्ले छ्यों का रूप कुलअटा कुल
टा जोषयी पकेही रहे सीम
न्अंतः सीमंतः जब तग गर्भ
नहो तो एक तर्फोका सिर गुंदावा
जाताहै उसका नाम सीमंततहै ज

व गर्भ हो तो उस तरुणीका सिर गूं
दाने में जो संस्कारहै उसका नाम
सीमंतहै मरहटमें सीमंत करि
णा सीमंत मरहटकों कहितेहैं
इस्ये न टिका लोपहो अग्रइों
अग्रोम अवमें मम्माहै प
नत अंजलिः पतंजलिः व्याकर
ण का पोथा सारअंगः सारंगः
हरिण तथा पक्षि विशेष
उओ अवर्ण उवर्णो परे सह ओभव
ति अ आ उ ऊके परे इन्ह्यो दो
नोंकों ओ होजावे गंगाउदकं
गंगोदकम् गंगाजल ऋग्र
अवर्णो ऋवर्णो परे सह अर् भवति
अवर्ण आवर्ण ऋवर्ण ऋवर्णके
परइन्ह्यो दोनोंको अर होजावे
तवऋद्धिः तवर्द्धिः तेरीहो वर्क
तहै कृष्णदार अवर्ण ऋवर्ण

सा॰
भा॰
१५

परे सह कविदारभवति अव
र्णे अवर्ण परे इयो दोनोंको किते
किते आभी होजावे शीते न
अतः शीतार्त्तः पालेसें ठरिया
इः वेः अतः इः वार्त्तः
इधसें जैयाहै प्रअर्णे प्रार्णम्
अच्छा करजा वत्सतर
अर्णे वत्सतरार्णम् बछु बा
वत जो करजहै कंबल अ
र्णे कम्बलार्णम् जो लोई भरे
का उधारहै अर्णे अर्णम अर्णा
र्णम एक करजा उतारणे वा
स्ते जो किते होरदे उधार करणाहै
सो अर्णार्णहै दशाअर्णे
दशार्णम दशार्णा एकदेश
का नामहै दशार्णा एक नदीहै
लृअल् अवर्णे लृवर्णे परे सहअ
लभवति अवर्णको लृवर्ण

होतृ ऋकारः होतॢकारः होतॢकारः

होता का ॡ कार है पर्य्यं

कः पर्य्यंकः पल्यंकः मंजेका ना

म रलयोडलयोश्चैवशसयोर्व

बयोस्तथा वदन्त्येषांचसावर्ण्यमलं

कारविदोजनाः रल डलकी

शस बबकी आपसमें सवर्णता क

बी लोक कहितेहैं ए ऐ ऐ अव

र्ण एकारे ऐकारेच परे सह ऐकारो

भवति अवर्णोप अते ऐके परे

दुयों दोनोंको ऐहोवे तव एषा

तवैषा तेरी यहहै तव ऐश्व

र्य्यं तवैश्वर्य्यं तेरा ऐश्वर्य्यहै इक

म हासल ओऔऔ अवर्ण ओका

रे औकारेच परेसह औकारोभवति

अवर्ण ओ औ परे दुयों सहित प

लें दे औ हो जावे तवओदनं तवौ

दनं तवऔत्रसं तवौत्रसं तेरा भ

सा·
भा·
१९

नहै तेरा औरे ओष्ठौवा समासे
अवर्णं ओष्ठे ओकारेण वाओभवति
अवर्णं ओष्ठ ओतके समा समे ओ के
साथ औरोवे परविकल्पकर्के बिं
बौष्ठः बिंबोष्ठः बिंब फल जैसा
लाल ओठहै स्थूलओतः स्थूलौतः
बुहृ बिलाहै समासे किं नबोष्ठ
नहां समा सनहो वहां नवोष्टः
सदा ओकारहै। इतिस्वरसंधिः

16

अथप्रकृतिभावउच्यते स्वर
संधिके उपरांत अब प्रकृति भाव कहा
तेहैं प्रकृति स्वरूपका भाव नाम होने
काहै सो जयसा स्वरूप वैसाहिं रहिणा
अर्थात् किसीक विशेष कारससें संधि
न होना इसका नाम प्रकृति भावहै
नामी अदसोमीशब्दः संधिंनप्राप्नोति
अदस् शब्दका जु अमी शब्दहै सो

अथप्रकृतिभावउच्यते

स्वर संधिके उपरांत अब प्रकृति भाव कहते हैं प्रकृति स्वरूपका भाव नाम होने काहै सोजयसा स्वरूप वैसाहि रहिणा अर्थात् किसीक विशेष वारससे संधि न होना इसका नाम प्रकृति भावहै अमी अदसोमीशब्दः संधिंनप्राप्नोति

अदस् शब्दका जु अमी शब्दहै सो संधिनं ना प्रापमहोवे अर्थात् अदस् शब्दकी अमी शब्दकी ईकौ य नहो अमी आदित्याः अमीअश्वाः इस जग्गा इकौ यु नहोया पह स्वर्यहै पह चोडेहैं द्विवि ईच ऊच एच ये ईकारांतऊकारांतएका रांतश्चशब्दाद्विवचनमानःसंधिंनप्रा प्नोति द्वि वचनका जु ईकार ऊ कार एकार इन्कोंभि संधिनहो जैसे

सा॰
भा॰
१०

अग्नी अत्र पटू अत्र मालेआनय दो
अग्नी इस जग्गामें है दो विद्यार्थी लड़के
इस जग्गामें हैं दो माला लेआ इत्यादि
जग्गामें हो ई ऊ ए इनतीनोंका द्विवच
नै है इस जग्गाभी संधिन होयी ईकों
य नहूआ ऊ कों व नहोया एकों अय
नहोयाएर मणी वादिवर्ज्यम
मणी वादिकों को छोड करके अर्थात्
मणी वादिकों मे संधि होजावे जैसे
मणीव रोदसीव दंपतीव
दो मणियोंकी न्याई आकाश अते
पृथ्वीकी न्याई स्त्री भर्ता कीन्याई इस
तीन जग्गामेंही सवर्णो दीर्घ स्वर क
र्के दो इकारों को दीर्घ ईकार होगिया
ओ निपातः आकार ओकार अनि
पातः एकस्वर श्च संधिंन प्राप्नोति
आकार अते ओकार इ जो निपात हैं
अते अइउ जइनको जैसी स्वर

उ रे परे होवें ओभि संधिको न प्राप्त
होवें निपात संज्ञा आगे खुल जावे
गी आ एवंमन्येरामब्रह्मात्मानंज
गदीश्वरम् आह इसी तरांहै के
जान्ता हीहैं ना रामचंद्र परमात्माहैं
ओर जगत् के ईश्वरहैं इस जग्गा आ
की निपात संज्ञा आ एवं इस्ये संधि
नहूई जैसे नो अत्र स्नातव्यम्
इस्ये न ठहिरी इस जग्गानो मेंजो
ओहै इस कोभी निपात संज्ञाहै
नोअत्र इस जग्गाभि संधिन हो
यी फिर अ अर्पहि ओ ए जापरे
इ इंद्रं पश्य उ उत्तिष्ठ इह इंद्र न्हदे
ख उह उठ खेलो डिग्गा ओंते इन सभ
जगोंमें जु स्वर बोडके फिर पद
जरा देरसें बोला जाताहै इसतें इन
कोभी निपात संज्ञाहोइ इन्होंभी सं
धिनहो ॥ प्लुतः प्लुतश्च संधिं न प्रा

सा॰
भा॰
१८

श्चोति सलभी संधिको न प्राप्तहो
इशशश्काचेनेटैः सतः इशशश्का
चे गाने रोदने विचारेचैः प्लुतोभवति
दूरते जो बुलानाहै और रोने
मेहै किसी वातको विचारणा अतै
वार वार कहिणा इन सभ वाकोंमें
ज टि हय उसकी प्लुत संज्ञाहै इसीय
कारसें त्रय मात्राभी हो जातीहै टी
की सो त्रिमात्रः प्लुत इस कर्के करी
होई संज्ञाभी बनीरही सोजैसे
देव दत्त पहि हे देव दत्त आज्ञा
न में जो अकारहै उसकी टिसंज्ञा
फिर प्लुत संज्ञा इसतें न प की संधि
देवदत्तेहि पसे न होवे देव दत्त
पहि पसे हीरहे इतिप्रकृति
भावः अथव्यञ्जनकार्य
मच्यते अब व्यंज नोंको जयसे
करणा चाहे सो कहिहैं

18

चपा अबे जबाः पदान्तेवर्तमानाश्च
पाजबाभवंति अबे परे पदां
त विषय वर्त्तमान ज चपहैं चटत
कप पंज होजब होन जडदगब
होन अबजो अइउऋऌएऐओ
औ हयवरल ञ ण न ङ म फ फ थ
घ भ ज ड द ग ब इनके परेहुयों अ
र्थात् पदांतके चपोंको छाके जब
कहैंगे अब प्रत्या हार परे हुये पं
जही चपहैं इनको पंजही जबक
हैंगे चन्ज टन्ड कन्ग प
न्ब वाक् यथा वाग्पारि ह
हस्पतेः वाणी प्रसीहै रामचंद्रकी
जैसे बृहस्पतिकी होतीहै अच्
अंतम् अजंतम् अजंतहै
षट् गताः षड्गता रामसहिताः
है संघे रामजीके लंये हयन
नत पतत् नदेतत् रामभवनम्

सा॰
भा॰
१९

19

यहीहै जैह रामजीका मंदिर
ककुब् राजते ककुब्राजते येह
तर्फ कैसी सहांती है ञमेञमा
वा पदान्ते वर्त्तमानाच्चपर्गाञमेपरेञ
मावाभवन्ति पदान्त विषे वर्त्तमा
न जो चपहै सो ञमपरेहूयां ञमबी
होजान अर्थात् चपबी होवन अते
ञम बी होवन चन्द्रे ञवी अते ञवी
टवू ड अते णभी वाक् मात्रं वा
ङ्मात्रं अते वाग्मात्रंभीहोवे वा
णी मात्रहै छोमरेहैं षट् मम ष
ण्मम षण्मममभी होवे च
पाच्छः शः चपात्परस्यशकारस्यछोवा
भवति चटतकप इन पांचोंते
परले शकारको छकारभी होताहै
और शकारका शकारभी रहिताहै
वाक्श्रूरः वाक्छूरः अते वाक्
श्रूरः वाक्श्रूरः भीवने वानीदा श्

मो अर्थात् गलांनाल जिसने वाला
होकभाः चपाडन्तरस्य हकारस्य कभा
वाभवति यद्वर्गगाच्चपात्तद्वर्गगस्यच
र्थोभवति चप प्रत्याहारतें परे
जो हकार है उसको कभ प्रत्याहारहो
विकल्प करकें जिस वर्गदा चप हो उस
वर्गदा चौथा अक्षर हकारको करदेगा
सोई कभ प्रत्याहार है जैसे तके परे
ध चतेंपरे फ कतें परे घ पतें परे भ
होवे तत् हविः त् ह् चपा अवे
जवासे ह् कीता अते ह् नूं धकीता तो
सिद्ध भया तद्धविः तद्हविः
भीबने ओर हविः हय वाक्हरिः
कत् ग ह नूं घ वाग्घरिः वाग्हरिः
भीबने बोलने नूं शेरहै षट्ह
लाति ट् ड् हनूं ढ षड्ढलाति
षड्हलाति भी सिद्ध हुआ ओर
लहैं स्तोश्चुभिश्चुः स्तोःसकारत

सा॰
भा॰
२॰

चै
वर्गयोशकारेणचवर्गेण योगेशकार
चवर्गौ यथासंख्येनभवतः सस्पशः
तवर्गस्यचवर्गः सकारको श्चते
तथदधनको शकार श्चते चछजझ
ञ परेहुये शकार श्च चछजझञहो
गिन्ती बमूजब होजावें स तथदधन
को श चछजझञ होवें कस
चरति कश्चरति कौन हुरताहै
वा खोदाहै तत चित्रं तच्चित्रम्
सो चितराहै तत्शास्त्रे तच्छ्
श्र शको चपाछः शः कर्के छकार
तच्छास्त्रं सो शास्त्रहै कसछाद
यति मनुष्य कश्छादयति
कौन छपि साल दाहै नशात् शा
कारात्परस्यतवर्गस्यचत्वंनभवति
शकारतें परे तथदधन चछजझञ
न होवें विश्नः प्रश्नः विश्नः
प्रश्नः इस जगा नकारको णका

20

सा· ॐश्रीगणेशायनमः श्रीसरस्वत्यै
भा· नमः कविन वारोवर्णराजा महा
१ राजरणवीरसिंह आज्ञादीनी सिरथा
र भाषाकोपद्धतनं आत्माकोप्रणा
मकीये बालबुद्धिहद्दिलीये वाणी

ॐप्रणम्यपरमात्मानंबा
लधीवृद्धिसिद्धये सार
स्वतीमृजुंकुर्वे प्रक्रियां
नातिविस्तराम् १ इ
न्द्रादयोपियस्यांतं न
ययुःशब्दवारिधेः प्रक्रि
यांतस्यकृत्स्नस्य क्षमो
वक्तुंनरःकथम् ॥

केसीप्रक्रिया सोसरस्वतीभी सरस्वतीकहुं
इन्द्रचन्द्रआदीजांको अंतनहिंपावें
स आपरशब्दसिंध नाइसारेकोके
सेनतें सोसरस्वतीप्रणीन थोहडी
प्रक्रियाज्ञमीन अनुभूतीमतभी

करोगायथामतिहै तत्रतावत्से
तासंभवत्वारायसंशुद्धते सोप
हिले सारस्वती प्रक्रियामें शास्त्रमें
प्रवृत्ति वास्ते मैंने संज्ञा कही करी
दीहय अइउऋऌ समानाः
अ इ उ ऋ ऌ इनकी समान संज्ञाहै
इन सभके उच्चारण वेले इक्को जै
सा काल लगताहै इसतें इनकी
संज्ञा समानहै अनेन प्रत्याहा
रग्रहणाय वर्णाः परिगणितेन तेषां
समानसंज्ञाच विधीयते इस सू
त्र करकें प्रत्याहार बनाण वास्ते अ
क्षर गिणीदे हैंन अर इन अक्षरों
की समान संज्ञाभी इसी सूत्रकरकेंहै
दोकार्य सिद्धहो एस सूत्रकरकें
नैतेषु सर्वेषु संधि स्वरसंधेयोः विव
क्षितत्वात् विवक्षित स्वर संधि भव
तीतिनियमात् ए जो कहियाऊ

सा॰
भा॰
२

र कहिणेहैं सूत्र इन्हों विषय संधि
नहिं करणी चाहे किउं कि अविवक्षित
चाहे इक्को संधि विवक्षित नहि कहिण
वाली जो सरस्वती है उसकी इच्छा नथी
इस जग्गा संधि करणेकी इसवास्ते
इथे संधि अविवक्षित है जहां कहि
णवाली के इच्छा संधि करण विषे
होवे उहां विवक्षित होता है विवक्षि
तहो तो संधिहो एह नेम है इस नेम
ते लौकिक प्रयोग निश्चयते
समय मात्रत्वाच्च अते व्याकरणके
प्रयोगोंकी सिद्धि वास्ते संकेत इक र
क्खदिता है इसतेंभी संधि नहिं हुआ
ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेदाः सवर्णाः
एतेषां ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेदाः पर
स्परं सवर्णा भाषन्ते इन अ इ उ
ऋ ऌ वर्णोंके ह्रस्व दीर्घ प्लुत एह जो
भेद हैं सो आपसमें सवर्ण कही

देने लोका च्छेषस्य सिद्धिरिति व स्यति सरस्वती ग्रंथके अंतविषय कहेगी के जो संज्ञा वा प्रयोगादि मैंने कहिणेथी रहि गियाहो तो इसकी सिद्धि और व्याकरणतें जानलेणी ततो लोककन एव ह्रस्वादि संज्ञा ला तव्या तब फिर सरस्वती सूत्र मैं ह्रस्वादिक संज्ञा नहींहै सो और व्या करणतें जानणी चाहे एकमात्रो ह्रस्वः द्विमात्रो दीर्घः त्रिमात्रः प्लुतः व्यञ्ज नं चार्द्धमात्रकम् जिसके उच्चा रण वेले एकमात्रा हो सो ह्रस्व होता हय जैसे अजः विस्वः अज विसकों कहिते है इस जगा अवर्णकी एक मात्रा है सो अवर्ण ह्रस्वहै जिसके उच्चारण समय दोमात्रा होवे सो दी र्घ जैसे आज्ञा हुकमकों कहितेहैं इस जगा आवर्णकी दोमात्राहैं सो।

सा॰
भा॰
३

आवर्ण दीर्घहै अर जिसके उच्चारण
वेले त्रयमात्रा हो सो प्लुत होता हय
जैसे आ एवं किल तत् आह टीक ३
से तरांहै इस जगा आवर्णको प्लुत
संज्ञाहै अर जिसके उच्चारण वेले अ
र्द्धी मात्राहो सो व्यंजन होता हय जैसे
रामं पश्य यज्ञ्धरम् इसजगा जो यज्ञ
धरम् का मकारहै इसकी अर्द्धी मात्रा
हय सो व्यंजनहै पुनः सर्वेषु
दात्तादि भेदाः सन्ति इनके अइउ
ऋ ऌ वर्णोंके औरभी उदात्तसें लयक
कैकैयी भेदहै जैसे उच्चैरुपलभ्य
मानः उदात्तः नीचै रनुदात्तः समवृत्या
स्वरितः सानुनासिको निरनुनासि
कश्च ऊंचे स्वरसे जो बोले सो उदा
त नीचें स्वरसें जो बोले सो अनुदात्त
एकजो जैसे स्वरसें जो बोले सो स्वरित
अर्द्धी बिंदु जिसके ऊपर बोले सो सा

नुनासिक होताहै अते जो नासिका
बीचन बोलो सो निरनुनासिक होता
हय ए ऐ ओ औ सन्ध्यक्षराणि ए
ऐ ओ औ इन्कों सन्ध्यक्षर कहितेहैं सं
धि नाम गंढनेका हय सो एह चारो
अक्षर दो दो स्वरां गंढके बने हुएहैं
अ इका एहै बनिया हुया अ एका ऐ
है बनिया हुआ अ उ ओ हुया अ ओ औ
हय एषां ह्रस्वा न सन्ति इन चा
रोंके बीच ह्रस्व कोइभी नहींहै जो
दीर्घहैं जो प्लुतहै उभये स्वराः
समान अर संध्यक्षर इन दोनोंकों
स्वर जानों अकारादयः पंच वर्णा
एकारादयश्च उभये स्वरा उच्यंते
अकारतें लयके पंज अ इ उ ऋ ऌ
अर एकारतें लयके चार ए ऐ ओ औ
इन दोनहरांके अक्षरोंकी अर्थात अ
इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ इन्हां नवां अक्ष

सा॰
भा॰
५

रोंकी स्वर संज्ञाहै जहां स्वर नाम आवे
तो इनकों समझना चाहिये अवर्जा
नामिनः अवर्णवर्जाः स्वराः नामिन
उच्यंते अवर्णते विना जो स्वरहैं अ
र्थात् इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ अठ अक्षर
इनकों नामी कहीदाहय अनुक्रो
ना लाव स्वराः ग्रंथक ग्रंथकर्त्ता
प्रत्याहार बनवानेकी इच्छावास्ते जो
वालकोंको प्रत्याहार बनानेंको टक्कु
ल आजावे इसवास्ते व्यंजनभी अनुक्रम
कर्कें कहिंदाहै हयवरल ञणन
ङम झढधघभ जडदगब खफछठ
थ चटतकप शषसः आद्यंताभ्याम्
प्रत्याहारे जिहलता आद्यंताभ्या मे
ते वर्णा आस्मा जिसने प्रत्या
हार बनाना होवे सो स्वरोंभी इर्व
जोड कर्कें एक अक्षर आदिका लेल
वेग्रा इक अंतदा जोडकर्कें इन्हा अक्षर

णेको ग्रहणकरे आदिरन्त्येनसहे-
इत्युच्यमाण तन्नाम प्रत्याहारः आदिका
अक्षर पुन अंतके अक्षरके आगे जो
इकार हो अक्षर इसे सो एक प्रत्याहा
र बनगिया तथाहि सोजीकर
अकारो वकारेण सह इच्य
माणो ऽव प्रत्याहारः अकार वकार
हे इर्व जोडिये तो अव प्रत्याहार ब
नगिया यथोऽन्यत्र सो बना
के भी देखनेहो अइउऋल एओऐऔ
हयवरल ञमणनङम झढधघभ ज
बगडदश इति अव प्रत्याहारः एह
जो अंते लयकर्केव पर्यंत इतने
अक्षरहैं इन सभका नाम अवहै
अर्थात अवप्रत्याहारहै जबगडद इ
ति जव प्रत्याहारः एह जव प्रत्याहा
रहै झढधघभ इति झभ प्रत्याहारः
एह झभ प्रत्याहारहै चटतकप इति

सा॰
भा॰
५

वण प्रत्याहारः एह वण प्राहारहै
एवं यत्र यत्र येन येन प्रत्याहारेण
कृत्ये स स स्तत्र नत्र ग्राह्यः इसी
तरां जिस जिस जागामों प्रत्याहार
से मतलब होवे सोसो प्रत्याहार उ
स उस जगामों लेलेना सङ्ख्या
नियमस्तु नास्ति प्रत्याहारोंकी
गिन्तीका कुछ नेम नहींहै गिनेंभी
जातेहैं पुन नहींभी गिणेजातें
हला व्यंजनानि हकारादयः सका
रांताश्चाणि हला व्यञ्जनानि भवन्ति
हकारतें लयकर्के सकारपर्यं
त जो हल प्रत्याहारहै नाम जिन्हादा
उन्का व्यंजन नामहै स्वरहीनं
व्यंजनम् व्यंजनको कालक्षणहै जो
स्वरते विना होता अर्थात् व्यंजनमें
स्वरनहींहोता कोई कहे भलाजी त
सो तो करियासी जे पण्ण रामं य

अर्थात् इस वाक्यके अंतका जो
म् हय सो व्यंजनहै तथा व्यंजन
की अर्द्धी मात्रा होती हय अर उस
में स्वर नहीं होता तो इन सभमें
तो स्वरहै तो कहिएगा जो तेष
ऽकारः स्वबोच्चारणार्थत्वादित् सं
ज्ञकः इनहमोंमें जो अकारहै
सो स्वबोले उच्चारण वाले रखिया
है ओ तो इतहै चेला किस सबक
के इतहै गुरुः कार्याये इत् प्र
त्ययाद्यतिरिक्तः कस्मै चित्कार्यायो
ऽच्चार्यमाणोवर्णो इत् संज्ञको भव
ति प्रत्यय आदिकोंका जु नहो
अर किसी थोडे कामवास्ते बोलि
याजाता जु अक्षरहै सो इत् संज्ञा
वाला होताहै जैसे खेलविचों यड
निकाल लये तो फिर का सबे
णी खेलसे प्रयोजनहै

सा॰
भा॰
८

यस्ते संज्ञा तस्य लोपः जिसकी
इत् संज्ञाहै उसका लोप होजाताहै
वर्णादर्शनं लोपः वर्णोकों
छादेणोंकों लोप कहिंद देन
वर्णविरोधो लोपश्च अक्षरसें
जो विरोधहै उसकों लोपश्च कहिते
हैं मित्रवदागमः आगम
जो है सो मित्रजैसा होताहै जिन
अक्षरों पास आगम आवे उन्कोंभी
कछु गुण होजाताहै शत्रुवदा
ऽऽदेशः आदेश जोहै सोशत्रुकी
तरह पर होताहै जैसे एक आदमी
का ओहदा छीनकर उसकों उठा दे
विये आउसके स्थान कोई ओर श
ख्स बिठा देविये इसी तरां एक
अक्षरकों छाकर जो दूसरा उसकी
जगा लिखदेताहै सो उसको आदे
श कहितेहैं स्थानेन्तरतमा ह

सा संयोगः   स्वरांका अंतराल न
हीहै जिन्ह बडते हलोंमे उसको संयोग
कहितेहै जैसे दध्यानय इस जगामें
द् ध् य् इन तीनोंका जो मेलनाहै इस
को संयोग कहितेहैं   कु चु टु तु
पु वर्गाः   पंजा पंजा अक्षरांके आदि
आदिको एक एक अक्षर लेके इनका
नाम वर्ग बनायाहै   उकारः पंच
वर्ण परिग्रहणार्थः   इनमें जो उका
रहै सो पांचोवर्णोंके लेणे वास्ते इक
संकेत रक्खियाहै जैसे कुदे ग्रहण
कीत्ते कखगघङ इन्हांपंजोंदा ग्रह
ण होताहै ऐसे   लो सुभिक्ष
इस सूत्रमें चु इस करके चछजझञ
कोभी लयलेंगे इसी तरां सभ जगा
में जानणा   अरेदो ग्रामिनोगुणाः
अर् एत् ओत् नामिनः स्थाने गुणसं
तका भवेति   अर् एत् ओत् एक

सा: भा: १

नामियोंके स्थान विषे जोआदेशहै
इनकी गुण संज्ञाहै जैसे इ उ ऋ लृ
एचार नामिहैं अ इ मिल करकें ए
जो आदेशहै इसकी गुण संज्ञाहै अ
ने जैसे सीतेशः रामः सीताका ईश
स्वामीहै राम इस जग्गा सीता ईशः
ऐसा कहिणा चाहे सो जो आ और
ईका ए बनादिआहै इसकी गुणसंज्ञा
है इसीतरां रामर्द्धिः रामकी जो ब
र्के नहो सो राम ऋद्धिः रामके पिछ
ली अकार ऋद्धिकी ऋइन्दोनों कों जो
अरहोगिया इसको गुण कहिते हैं
फिरइसी तरां रामोत्ता रामचंद्रजी
का वेलहै सो इसजग्गा राम उत्ता गे
की गुणसंज्ञाहै औरैऔ वृद्धिः
आ आर ऐ औ एते वृद्धिसंज्ञका भवंति
आ आर ऐ औ एह चारो नामि
योंके स्थानमें जो आदेशहैं इन्को वृ

7

इ कहीदाहै ग्रंत्यस्वरादिष्टिः

ग्रंत्योयःस्वर स्तदादि वर्गा ष्टि संज्ञको भवति पद विषे ग्रंतका क्या म मन् विशला जो स्वरहै ग्रोह ग्रते उस दे नाल पर्ला जो व्यंजनहै इन दुहो कीटि संज्ञा टि नामहै जैसे मनस् इसजग्गा न में अ ग्रहैं सो ग्रंतका स्वरहै ग्रते पर्लास् महै इन्दोनोंकी टि संज्ञाहै ग्रते जिस जग्गा परे हस कोई नहोवे ग्रंतकी स्वरके तव उस ग्रंतके स्वरकोंही टि संज्ञा होतीहै जैसे कर्क इस जग्गामें कामे अ ग्र है इसकोंही टि संज्ञाहै ग्रसंयो गादिपरोहस्वो लघु जिस ग्रल रतें परे संयोग ग्रते विसर्गा ग्रते विंडन होवैं उसकी ग्रते जो हस्व है उसकी लघु संज्ञाहै जैसे राम माता यशस्विनी इस जग्गामें राम

का ज मकारहै इसकी लघु संज्ञाहै
रामचंद्रजीकी जो माताहै सो यशवा
लीहै   विसर्गानुस्वारसंयोगपरो दी
र्घश्च गुरुः   जिस अक्षरते परे विस
र्ग अनुस्वार संयोग एह त्रय निमित्त व
पो वकव होवें अते जो दीर्घहै इनसभकी
गुरु संज्ञाहै जैसे रामं पश्य रमानाथं
रामःस्वपिति निर्जने देखि रामचंद्रजी
कों जो लक्ष्मीके खोवंदहै अबकैसे ए
कले वनमें सोतेहैं इस जगहा रा दीर्घ
मं परे अनुस्वार प परे संयोगमः परे
विसर्ग इनसभ चारोंकी गुरुसंज्ञाहै
मुखनासिको ऽनुनासिकः मुखनासि
काभ्यां मुच्चार्यमाणो वर्णो ऽनुनासिक
संज्ञको भवति   मुख अते नासि
का बीच जो बोले अक्षर उसकी अनु
नासिक संज्ञाहै जैसे राम सेवापरो
नित्यं हनुमांश्च विभीषणः रामचंद्रजी

की चाकरीमें तैनातहैं सदा हनुमा
न् अते विभीषण दोनो इस जगा
हनुमां जो मां कारहै सो नासिका
अते मलकके बोलताहै इसकी अ
नुनासिक संज्ञाहै वर्णग्रहणे
सवर्णग्रहणं कारग्रहणे केवलग्रह
णं तपरकरणं तावन्मात्रार्थम्
जिस अक्षरके परे वर्णबोले उस्थे स
वर्णदावी ग्रहण होताहै जैसे अवा
र्णो सस्य विसर्जनीयस्य लोपश्च भ
वन वे परे कइह इस्थेभी अते देवा
आ अवर्णदा ग्रहणकरना अर्थात्
भी ग्रहणहो जिसदेपरेकार अतेत
उस अकलेदाई ग्रहण इति ज्ञत इस्थे
फल न अते इकार उकार इस्थे दीर्घन
लेणी
इति संज्ञा प्रक्रिया
संज्ञा कही करणो समासहुई
अथना हासंधिरभिधीयते

अब स्वरसंधि करिते हो अर्थात् स
रको अगले अक्षरनाल गेढणा
इ यं स्वरे इवर्णो यत्व माप्यते स्व
रे परे स्वरपरे इक्यो इ ई को
छाकके य् बनादेना दधि आनय
न या तो इको य् कीया तो पहिले
दध्य् आनय बनियो हसे ऽर्ह
सः स्वरात्परो रेफ हकार वर्जितो ह
सो हसे परे द्वि र्भवति स्वरते परे
न रहने विना हसहे उसके दो व
नादेणे हसप्रत्याहार परे इक्यो स्वर
तें विना जो अक्षरहे उसन् हस करि
दाहै इति धकारस्य द्वित्वम्
इसतरा धकारको दोकीते दध्य् य्
य् आनय बनिया झभे जबाः झ
सानं झभे परे जबा भवन्ति
झसोको झढ्धघढभ जडदगब खफ
छठथ चटतकप शषस इनको

फठथछभ पे इन्हों जडदगब हो
वे इति झर्वथकारस्य दकारः
पछे पहिले धृकों द् होया
सवर्णनात थकारका दकारही
सवर्णसी इसकर्के वर्ग्यो वर्ग्ये
ण सवर्ण इतिवचनात आपने
वर्गदा अक्षर अपने वर्गदे अक्षर
नाल सवर्ण होताहै तथदधनइ
सवर्गमेंभी दकारही अते जबोंवि
षभि दकारहीआया यथासं
ध्वे वा वक्रभम नहितो फठ
थछभ पंजांद् जडदगब गिन्तीवा
लेनाल बेशकऊकहैंण तोभी दईह
श्रा तो सिद्धहोई गिया स्वरहीने
परेण संयोज्यं स्वरतें विना जो
अक्षरहो सो परलेकेसाथ जोड़ी दे
णा वास्ते दध्यानय दध्या
नय वरानने शिवजी पार्वतीको

सा॰ वा कोई पुरुष अपनी स्त्रीको क
भा॰ हिताहै कि दंही लेआ   गौरी अत्र
९ ईकोंभी यकार होईगिया इसे
ईसः करके र ना द्विन होया   पर
रा यणो द्विः स्वरपूर्वाद्रेफात्परो यणो
द्वि र्भवति   स्वरहै पूर्व जिसके
एसा जो व्यंजन रकार है उसतें प
रों यण यवरल ञमङणनम झढ
धघभ जडदगब खफछठथ चट
10 तकप द्विन होजान गौर्य्यू अत्र
एसा वनियो   स्वराहीनं० जल
तुंबिका न्यायेन रेफस्यो ईगमनं
जैसे जलमें तूंबी सटिये तो ऊपर
कोंही आतीहै उसथों हेठ नहीं ज
नोंदा इसी तरों रकार यकारके
उपर चढीगिया गौर्य्यत्र सिद्धभया
गौरीजी इस जगामें हैं रेफकाभी
सभाव भले पुरुषकीन्याई है जैसे

पौरेगतो यः शिरसा वर्थार्थते समा
गते सश्यति नाम नक्षः प्रायः पौषो
द्धिशुगान मीरहते रकारतस्यप्रकृति
र्महात्मा १ भलालोक किसीके घर
द्वारके जावे तो उसको अगले लोक
सिरते छुक्का लेंदे हैन अते उसदे घ
र कोई आवे तो जरूर उदे पैरं वंङ्गी
के उसनो सिरते छुक्की लेंदाहै अते
जिसदे घरजांदाहै उसनूं हाला की
तो चोड़ाहै बहुत करकें रकारका जै
साहै सभाव जिस महात्माका रकार
भी जिस अक्षरके घरजावे उसके ऊ
पर चढ बैठदाहै अते उसनू छिनक
दाहै अतेर सिरपर चढके छिन कै
से कर्ताहै जैसे अवथार्थतेमेंहै व
र्णा लग कर सिर पर कैसे छुकदाहै
जैसे नक्षमें   सर रस ऽवर्वर्तते
अगे उवे ऊरं आदिस्थानमेंभी

सा॰
भा॰
९

स्वरकी अनुवृत्ति करणीके हुतिना
ल स्वरे परेभी पढना एव उम
मात्रापि यत्र यत्र न सज्ञालौः का
र्य सिद्धि तत्र सर्वांतरा मदानुवृत्ति
र्ज्ञातव्या ग्रन्थमन्तरभयान्नास्माभि
र्लिख्यते एसी तरां होरभी ज
हांसूत्रके अक्षरों साथ्य कार्य सिद्धि
नहो तहां तहां और सूत्रसें पदकी
अनुवृत्ति करलेणी ग्रंथबडा होजा
नेके भयतें असांने नही बड़ता लि
खिया उवम् उ वर्णो वन
मापद्यते स्वरे परे स्वरपरेडुधो
उ ऊ कों वकार होजावे मध्वत्र
त्र मधुअत्र उभ्यो मनीररहे
ऋरं ऋवर्णो रनमापद्यते स्वरे परे
स्वरपरेडुधो ऋ ॠ कों रकार होजावे
पितृ अर्थः पित्रर्थः पित्रर्थमनका
मो व्यचरत तपर्वनमिति पिता दशार

थकी सच्ची प्रतिज्ञा करणवाले राज
कों छोडके वनविषे विचरदे होये
जयहो श्रीरामचंद्र जीकी   लृतं ल
वर्णो लत्वमापद्यते स्वरे परे   स्व
रपरेहुयां लृकों लकारहोवे   लृ अ
नुबंधः लनुबंधः   लृरनहय
ए अय् एकारोऽय् भवति स्वरेपरे
एमात्र अय् होवे स्वरपरेहुयां   ने
अयनम् नयनम्   नेत्रकानामहै
ऐ आय् ऐकार आय् भवति स्वरेपरे
ऐकों आय् हो स्वरपरे हुयां
नै अकः नायकः   चेगा पुरुषश्रेष्ठ
ओ अव् ओकार अव् भवति स्वरे
परे   ओकार अव् होवे स्वरपरेहु
यां   भोअति भवति   एककोंज
ताने वाला क्रियापद   गवादे स्व
र्णोगमो वाच्यो वक्तव्यः   गो आ
दिक जो कोई शब्दहैं उनकों अन्ता

सा°
भा°
२

दिक कईशब्द पर होंदियो अवर्णोका
आगम आवे गो अद्ताः बीच अवर्णोका
आगम आया गो अ अद्ताः बनियो ओ
अव् सवर्णोदीर्घः सह गवाद्तः
कारोबा इसे नर्को गोऽस्तुः अइप
गवेंद्रः गोपाल गोअजिने
गवाजिने प्रऋछः प्रोछः ऋओ ओ
ओ ओ वृद्धा केई रिणी कैरिणी अर प
पपेपे फाहर्णा जिनानी सईरं सैरं वु
दो अत्तऋहिणी अदौहिणी सेना
कविरुरवत् यकारः किते कि
ने सर समय कारनं जानणा यथा
जैसे गोऽग्नि इस्ये यकार
कोंहो सर मन्नके ओ अव् कोगिया
गव्यूति अध्वपरिमाणे दो कोस
का नाम अस्यवगावो मिश्रीभावे
इसतें विना जित्य वगाकानाम
इस्ये यकार न सर जैसा मन्नणा तो

12

गोयूति वगोका नाम गेप्रव् न
होया गेप्राव् गेकार प्राव् भव
ति स्वरे परे स्वर परे होम्मां गेकों
प्राव् हो जावें योश्रकः यावकः
जवांदा कोदा श्चोर्लोपश्च वाप
दांने पदांनेष्वित्नानानयादीनां य
कार वकार योर्लोपश्च् वाभवति
जे कार पदांत के ए ऐ ओ औ नें अय
आय् अव् आव् आदेश होन तदध् का
र तथा वकार का लोपश्च होजावे वि
कल्प करकें ते आगताः ते पदां
तकी ए है पश्चय् मू कारका लोपश्च
लोपश्च प्रनर्नसंधिः तआगताः
तया गताः सो आये हयें
तस्मै एतत् ऐश्राय् तस्मा एत
त् तस्मा येतत् पटोश्ह पटश्ह पट
विह तोइमौ ताइमौ ताविमौ लोप
श्चिप्रनर्नसंधिस्तुंदमितभवति

सा॰
भा॰
१३

13

लोपश्च करके संधि नहिं होती जहर पर
वेद विषे होजावे   हेसखे इति हेस
खे इति   अइप   हेसखेति एदो
तोतः पदान्तेस्थिता देकारा दोकाराच्च
परस्या कारस्य लोपोभवति   पदांत
विषे स्थित जो एकार तथा ओकार ति
सते परे अकारका लोपहोवे ते अत्र
तेत्र अटो अत्र पटोत्र सोऽयहैं है वि
द्यार्थी इसी जगाहैं   सवर्णेदीर्घःस
ह सवर्णस्य सवर्णेपरेसहदीर्घोभवति
सवर्ण स्वरको सवर्ण स्वर परे ह
यां दोनोंको रलाके अर्थात् पहली उली
दोनो स्वरको दीर्घ कर देणा उरे ह्रस्व
परे दीर्घ तोभी दीर्घ करणा उरे दी
र्घ परे दीर्घ तोभी दीर्घ दोतर्फ दीर्घ
हो तोभी दीर्घ दो तर्फी ह्रस्व तो भी
दीर्घ   अत्राप्यत्र अद्यात्र   इस
जगा अद्याहै   दधिइह दधीह

दर्हीभी है इस्से भान्नुदयः भान्नूदयः
सूर्यका उदय होना पितृणां
पितृणां पितरोंका उधार सा
मान्यशास्त्रतो नूनं विशेषो बलवान्
भवेत् सामान्य शास्त्रतें विशेष
शास्त्र बली होताहै परेण सर्व
बाधोवा प्रायशोदृश्यतामिह अ
गले सूत्रादिकसें पिछलेकी बाधा ए
साही प्रकार इस शास्त्रमें हय जैसे इ
यं सूत्रे का सवर्णो दीर्घः सह करके
बाधाहै इयंसूत्रे सामान्य सवर्णो दीर्घः
सह विशेषहै इसी तर्हो भान्नू दयः
में उवंसा मन्य पितृणांमें ऋरं सामा
न्यहै अइए अवर्ण इवर्णपरे स
ह ए भवति अवर्ण इवर्णके प
रेऊंयो पर्ले इ वर्णके साथ ए हो जा
ताहै अर्थात् अ इ को रलाके ए क
रदेणा नवइदं नवेदं पहतेगाहै

सा· मम इदं ममेदं यह मेराहै इ
भा· लादेरीषादौ देलोपो वक्तव्यः इ
१४ ला दिक कर्यों की टीका लोपहो ईषा
दिक कर्यों शब्दोंके परे ईषा हल
ईषा लमें अ टि उसकालोप
हलीषा हलका फाला लां
गलईषा लांगलीषा लांगलभी ह
लको कहितेहैं उसकी ईषा फाला
मनस् ईषा नमें अ अंतेस दोनों
की टिसंज्ञा लोप मनीषा बुद्धि
शाकअंधुः शाकंधुः ये छो
का रूप कुलअटा कुलटा
जो स्त्री पैकेही रहे सीमन् अंतः सी
मंतः जब तग गर्भ नहो तो प
क तर्फ़का सिर गुंदावा जाताहै उस
का नाम सीमंतनहै जब गर्भहो तो
ओर तर्फ़का सिर गुंदानें में जो संस्का
रहै उसका नाम सीमांतहै सारहदमें

सीमांत कहिए सीमांत सरहद्दको
कहिते हैं इस्मे न टिका लोपहो
अद्य ओं अद्योम् अवमें मन्याहै
पतत् अंजलिः पतंजलिः
व्याकरण का पोथा सार अंगः
सारंगः हरिण तथा पक्षि वि
शेष उगे अवर्ण उवर्ण परे सह
गुभवति अ आ इ ऊ के परे ह्यो
दोनोंको ओ होजावे गंगा उद
कं गंगोदकम् गंगाजल अथ
र अवर्ण ऋवर्णे परे सह अर भवति
अवर्ण आवर्ण ऋवर्ण ऋृवर्णके
परह्यो दोनोंको अरहोजावे न
व ऋद्धिः नवर्द्धिः नौ ही वर्कतेहै
कचिदार अवर्ण ऋवर्णे परेस
ह कचिदारभवति अवर्ण ऋव
र्ण परे ह्यो दोनोंको किते किते
आरभी होजावे शीते ऋतः शीता

सा॰
भा॰
१५

र्तः पालेसें टरिया ऋःखेऋ
तः ऋःखोर्तः इसमें ओघाहै
प्रऋणं प्रार्णम् प्रछा करजा
वत्सतरऋणं वत्सतरार्णम्
बछ्रु का वत जो करजहै कंबल
ऋणं कम्बलार्णम् जो लोई म
रेका उधारहै ऋणऋणम् ऋणा
र्णम् एक कर्जा उतारणे वास्ते
जो फिर होरदे उधार करणाहै सो ऋ
णार्णहै दशऋणं दशार्णम्
दशार्ण एकदेशका नामहै दशार्ण
एक नदीहै लृअल् अवर्ण लृव
र्णे परे सह अल् भवति अवर्ण
को लृवर्ण परे हुयां लृके साथही
अल् आदेशहो तवल्कारः त
वल्कारः तेरा लृकारहै रल
योः सावर्ण्यम् वाच्यम् रल का ऋ
लृका आपसमें सावर्ण्यहै

15

परेऽश्यां लृके साथही अल आदे
शहैं नवलृकारः नवलकारः
नेरा लकार है रलयोःसा
वर्ण्यम् वाच्यम् र ल का ऋ
लृका आपसमें सावर्ण्य है
होतृ ऋकारः होतृकारः होत्लृ
कारः होता का लृकार है
परिअंकः पर्य्यंकः पल्यंकः
मंजे का नाम रलयोडलयो
श्चैव शसयोर्बवयोस्तथा वदन्ते
षांच सावर्ण्यमलंकारविदोजनाः
र ल ड ल की श स ब व की आ
पसमें सवर्णता कबी लोक क
हिते हैं ए ऐ ऐ अवर्ण एका
रे एकारे च परे सह ऐकारो भवति
अवर्णए अगे ऐके परेऽश्यां
दोनों को ऐ होवे नव एषा नवै
षा तेरी एह है नवैश्व

सा॰
भा॰
१९

16

यं तवैश्वर्यं   तेरा ऐश्वर्य है इ
कम हासल   ओ औ ओ अवर्णा
ओकारे औकारे च परे सह औकारो भ
वति   अवर्णा ओ औ परे इकट्ठा
सहित पहले दे औ हो जावे   तव
ओदनं तवौदनं तव औन्नत्यं तवौन्न
त्यं   तेरा भत है तेरा औ है
ओष्ठोत्वोर्वा समासे अवर्णा ओष्ठो रो
कारेण वा औ भवति   अवर्णा
ओष्ठ ओतु के समासमे ओ के साथ
औ होवे पर विकल्प करके   बिंब
ओष्ठः बिंबौष्ठः   बिंब फल
जैसा लाल ओठ है   स्थूल ओतुः
स्थूलौतुः   बड़ा बिल्ला है
समासे किं तवोष्ठः   जहां समा
स नहीं वहां तवोष्ठः सदा ओका
रही   इति स्वरसंधिः

संधिन्न ना प्राप्त होवे अर्थात् अदस् श
ब्दकी अमी शब्दकी ईकौं य नहो
अमी आदित्याः अमीअश्वाः इसज
गा इकौं य नहोया पर सूर्यहै पर घो
ड़े हैं ईदूदेत् द्विवचनं प्रगृह्यम् ईका
रांत ऊकारांत एकारांतम् शब्दों द्विवच
नमात्रः संधिं न प्राप्नोति द्विवचन
का जो ईकार ऊकार एकार इन्कोंभि
संधिन हो जैसे अमी अत्र पद्मा
त्र माले आनय दो अग्नी इस जग्गा
मेंहै दो विद्यार्थी लडके इस जग्गामें हैं
दो माला लेआ इन्लान जग्गामें ही ई ऊ
ए इन तीनोंका द्विवचनहै इस जग्गा
भी संधिन होयी ईकौं य नहुआ ऊ
कौं व नहोया एकों अय् नहोयापर
मणीवादिवर्जम् मणी वादिकों
को छोड करकें अर्थात् मणी वादिकों
मे संधि होजावे जैसे मणीव रो

सा·
भा·
९

दक्षीव दंपतीव दो मणियोंकी न्याई आकाश अते पृथ्वीकी न्याई स्त्री भर्ता कीन्याई इस तीन जघा मेंही सब ऐं दीर्घ सह करके दो इकारों को दीर्घ ईकार होगिया ॐ निपातः आकार ऐकारश्च निपातः एकस्वरश्च संधिं न प्राप्नोति आकार अते ऐकार ए जो निपातहैं अते अ इ उ जा इनको जैसी स्वर उरे परे होवें प्राप्ति संधिको न प्राप्त होवें निपात संज्ञा आगे खुल जावेगी आ एवंमन्यसे रामममात्मा नंजगदीश्वरम् आह इसी तरांहे तुं जानताहींहे ना राम चंद्र परमात्माहैं और जगत् के ईश्वरहैं इसजगा आ की निपात संज्ञा आ एवं इन्ह्ये संधिन हूई तैसे नो अत्रस्नातव्यम् इन्ह्ये न ठहिरो इस जगा नो मेंजो उरेहे ए स कीभी निपात संज्ञाहे नोअत्र

17

इस जगाभि संधिन होयी फिर अ अर्प
हि ओ प जापरे   इ ईदूंप्रगृ उ ऊ निए
इह ईद्र नदेघ उह उदवेलो डिग्गा अंते
इन सभ जगों में ज स्वर बोडके फिर
पद जरा देरसें बोला जाताहै इसतें इ
नकीभी निपात संज्ञाहोइ इन्होंभी सं
धिनहो   प्लुत: प्लुतश्च संधिं न प्राप्नोति
प्लुतभी संधिको न पावंदो   दूरा
द्धाकानेदे: प्लुत: दूराद्धाकाने गाने रो
दने विचारेदे: प्लुतोभवति   दूरतें जो
बुलानाहै और रोने जोहै किसी बातको
विचारणा अंते वार वार कहिणा इन
सभ वाकोंमें ज टि हय उसकी प्लुत
संज्ञाहै इसी प्रकारसे त्रय मात्राभी हो
जातीहै टीकी सोत्रिमात्र: प्लुत इसक
कें करी होई संज्ञाभी बनीरही सोजैसे
देवदत्त पहि हे देवदत्त   आज्ञान
में जो प्रकारहै उसकी टिसंज्ञा फिर

सा॰ भा॰ १८

18

प्लुत संज्ञा इसतें न पकी संधि देव दत्तै
हि एसे न होवे देव दत्त एहि एसे होत
है इतिप्रकृतिभावः
अथव्यञ्जनकार्यमुच्यते अब व्यं
जनोंकी जयसे करणा चाहे सो कहि
हैं चपा अबे जबाः पदान्तेवर्तमा
नाश्चपां जवा भवंति अबे परे पदांत
विषय वर्तमान जु चप है चटतक
प पंज सो जब होन जडदगब हो
न अब जो अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ
हयवरल ञणनङम झढधघभ
जडदगब इनके परे हुयां अर्थात्
पदांतके चपांकों छाके जब करैणे
अब असा होर परे हुयां पंजही चपा
हैं उनकों पंजही जब करैणे च नू
ज ट नू ड क नू ग प नू ब
वाक् यथा वाग्यथाहि बृहस्पतेः
वाणी एसीहै रामचंद्रकीजैसे

बृहस्पतिकी होतीहै अथ अंतम्
अंतम् अंतहै षट्गताः षट्
गता रामसहिमाः छे संठे राम
जीके लये हयन ननपतन नदे
नन् रामभवनम् पहीहै गेह
रामजीका मंदिर ककव् राज
ने ककबाजने येह तर्फ कै
सी सहांदीहै नमेन्नमावा पदान्ते
वर्तमानास्यपन्नमेपरेप्रमावाभव
नि पदांत विषे वर्तमानजो च
पहै सो नम परेड्यो नमबीहोजा
न अर्थात् चपबी होवन अते नम
बी होवन चवं न्वी अते न्वी टव्
ड अते णभी वाक्माचं वाङ्मा
चं अते वाग्मात्रं भीहोवे वाणीमा
त्रहै छेमरेहैं षट्मम षण्मम
षणमभी होवे चणाठःशांच
पाठुनरसपशकारसहोवाभवति

चटतकप इन पांचोंते परें शकार
कों छकारभी होताहै और शकारका
शकारभी रहिताहै वाक्‌श्रूरः
वाकछूरः अतेवाक्‌ श्रूरः वाक्‌
श्रूरः भीकने वानीदा श्रूर्मा अर्थात्
गल्हां नाल जित्तने वाला होफ
भाः चपाङ्गनरस्यहकारस्यफभावा
भवंति यद्वर्गगास्यपात्तद्वर्गगस्य
तर्थोभवति चप अस्मा हारतें
परे जो हकारहै उसको फभ अस्मा
हारहोवि कल्प करकें जिसवर्गदा च
पहो उसवर्गदा चौथा अक्षर हका
रकों करदेगा सोई फभ अस्मा हार
है जैसे तके परे थ चते परे फ क
तें परे घ पते परे भ होवे तत्
हविः तत् चपा अवे जवासें
ह्‌ कीता अते हन्‌ थकीता तोसि
द्धभया तद्धविः तद्धविः

भीवने ओह हविः हय वाक्हरिः
कन्नू ग ह न्नूं च वाग्घरिः वागह
रिः भीवने बोलने नूं शोरहै
षट्हलानि ट ड हनें ढ
षड्ढलानि षड्हलानि भी सिद्ध
हूआ हैहहतैहें स्तोश्चुना श्चुः स्तोः
सकारतवर्गयोशकारेणचवर्गेण
योगेशकारचवर्गौ यथासंख्येनभव
तः सस्यशः तवर्गस्यचवर्गः
सकारकों अते तथ दधनकों शका
र अते चछजझञ परेइयां शकार
अर चछजझञहीं गिन्ती बमजब
होजावें म तथदधनकों श चछझ
जझञ होवें कस्स्चरति कश्च
रति कौन दुरताहै वाएंदाहै
तत् चित्रं तच्चित्रम् सोचित्रहै
तच्छास्त्रं सोशास्त्रहै
कस्स्छादयति मन्त्रश कच्छा

सा॰
भा॰
२०

दयति कौन छपि ग्रालदाहै
नशात् शकारात्परस्यतवर्गस्यचवं
नभवति शकारतें परे तथद
धन चछजझञ न होवें विश्ना
नः प्रश्नः विश्नः प्रश्नः इस ज
गा नकारकों णकार नहो
ष्टुनाष्टुः स्तोः सकारतवर्गयोः षका
रटवर्गाभ्यांयोगेषकारटवर्गौस्तः
सस्यषः तवर्गस्यटवर्गः स त
थ दधनकों ष ट ठ ड ढ ण ही होन
गिल्ली वम् जव कस्टीकते
कष्टीकते कौन टीकदाहै
तट्टीकते तट्टीकते ओह टीक
दाहैं तोर्लिः तवर्गस्य लका
रे परे लकारोभवति तथदधन
को लकार परे हुंदा लकारही हो
जावे तल्लाति तल्लाति
सोढ्कदाहै जो ओडदाहै

भवान् लिखेति भवाँलिखेति
तूंलिखता हैं चेला फिर पूई
अनुस्वार कहांसें आया गुरुःअंत
स्थाश्चिपभेदाः रेफवर्जिता य वलाः
सानुनासिकानिरनुनासिकाश्च तत्र
नकारस्य सानुनासिकस्यानुना
सिकोलकारः स्यात् यलव यह
तीनो अक्षर नासामेंभी बोलतेहैं
श्रार वैसीभी बोलतेहैं नकारकों अ
लकारहो सो नासामें बोलने वाला
हो इसका का लक्षणहै जो पूर्व
ले अक्षर ऊपर आयासो अनुस्वार
करदेना नश्चि छकारे परे न
वर्गस्यत्वंभवति छकार परेदं
त्यो नथदधनकों टठडढण नहो
वें भवान् षष्ठः भवान्षष्ठः
तूंछठवांहै इस जगा नकार कोंण
कार न होया तोरेन्यात्

21

21

सा॰ ॐश्रीगणेशायनमः अथविभ॰
टी॰ क्तिर्विभाव्यते अथनामइसकेअ
नंतरपंचसंधिकथनके अनंतर
विभक्तियोंहै सोकहतेहै
साद्विधास्यादिस्त्यादिश्च । सो
विभक्तिदोप्रकारकिहै कौणए
कस्यादिएकत्यादिसि आदिमेजि
सकेसोकहावेस्यादिति हय आ
दिमेजिसकेसोकहावेत्यादि ।
विभक्त्यन्तम्पदम् विभक्तिअ
न्तेयस्यतद्विभक्त्यन्तम् विभक्ति
हय अन्तमेजिसके उसकिपद
संज्ञाकहतेहै ।
तत्रस्यादिर्विभक्तिर्नाम्नाप्रयुज्यते
तत्रनामस्यादित्यादिकेमध्यमे
स्यादियोविभक्तिहय सोनाम॰

नैंपवैं जोडिदिहय त्यादियोविभ
क्तिहय सोधातुसेपरेजोडिदिह
य

अविभक्तिनाम नविभक्तिरवि
भक्ति अविभक्तिनामइत्युच्यते
विभक्तिरहितंधातुवर्जितमर्थं
वच्छब्दरूपंनामेत्युच्यते विभः
क्तिसेरहित धातुसेंवर्जित अः
र्थवत् येशब्दरूप तिसकोना
मकहतेहय ।

कृत्तद्धितसमासाश्च कृच्चतद्धि
तश्चसमासश्च तेकृत्तद्धितसमा
साः प्रथमाबहुवचनान्तम्
चेत्यव्ययपदम् कृत्प्रत्ययात
द्धितप्रत्ययांतचशब्दः समाः
सश्चप्रातिपदिकसंज्ञिकहेन

भा॰ किसेकेमतमे

टी॰ तस्मात् सि औ जस् अम् औ श
स् टा भ्यां भिस् ङे भ्यां भ्यस्
ङसि भ्याम् भ्यस् ङस् ओस्
आम् ङि ओस् सुप् द्विपदम्
द्वाविंशत्यंवा तस्मान्नाम्नः
पराः स्यादयः सप्तविभक्तयो
भवंति

जिसनामकेपरे स्यादिसातवि
भक्तियांहोतीहैं न

तत्रार्थमात्रैकत्वविवक्षायां
प्रथमैकवचने देव सि इति स्थि
ते

तत्रनामसप्तविभक्तियोंके म
ध्यमे अर्थमात्रकीएकत्ववि॰
वक्षामें प्रथमैकवचन सि प्र॰

३

त्ययकरके देव सि अयसि-
श्यितभइ इकारउच्चारणार्थः उ
च्चारणपवअर्थः प्रयोजनंयस्या
सौ उच्चारणार्थः
उच्चारणहै अर्थनामप्रयोजन
जिसका सो कहावेउच्चारणार्थ
सोविसर्गः सच रुच सो तयोः
सोः अप्युत्पत्तिपक्षेमतस्मात् इ
सस्त्रकरके सिप्रत्ययभया
अप्युत्पत्तिपक्षमे हनडिनइस्या-
हि स्त्रकरके सि प्रत्ययभया
सकाररेफयो विसर्जनीआदेशो
भवति विसर्जनीआदेशेभवति
कयोः सकाररेफयोः सकार
औररेफको विसर्जनीआदेश-
होवे अयावतें रस परेहोसंते-

सा·
टी·

वचनः पदांतके विषे देवसि इ
स अवस्थामें इकार उच्चारणार्थ
गया तब देवस् अयसीत्यादि
भए तब सो विसर्ग इसकरके·
सको विसर्ग होइ गया देवः सि
द्ध होइ गया·
द्वित्वविवक्षायां देवौ द्वित्ववि
वक्षामे प्रथमाका द्विवचन औ
आया तब देव औ अयसा भया
तब औ औ औ इसकरके अकार उ
त्तरवर्ती अकार अरु औकार दो·
नोंको औकार होइ गया देवौ·
सिद्ध भया । बहुत्वविवक्षायां
प्रथमा बहुवचने देव जस् इति
स्थिते जसोऽतसंज्ञायां तस्य लो·
पः प्रयोजनं जसीति विशेषणा

४

र्घः दीर्घविसर्गौ देवाः बहुत्ववि
वक्षाविषे प्रथमा बहुवचन जस्
स् प्रत्यय आया नव देव जस् अ
यसा होपया नव जकार कि इत्सं
ज्ञा होइ नव जस्येत्संज्ञा नस्य लो
प इसकरके लोप होइ गया नव
देव अस् अयसा भेया नव सव·
र्णे दीर्घः सह इसकरके दीर्घ·
भेया नव देवास् अयसा भेया
नव रोविंगे इसकरके सको
विसर्ग होइ गेया देवाः सिद्ध भ
या ।

अकारान्तपरस्य जसोऽक्क कक्षा विह
क्ष्यः कक्वि त्रामकि नेक अका
रांतपरे योजस् तिसको अक्क
का आगम होवे देव जस् इतिस्थि

सा॰ टी

ते नव पूर्वत्र जकारकि इत्संज्ञा
लोप नव देवअस् प्रथमाभया
नव जस्को असुक्का आगमभ
या सो टित्कितावाद्यंतयोर्वकयो
इसकरके जस्के अंतमेभया न
वककि इत्संज्ञालोप नव सकार
के उकि इत्संज्ञालोप नव देव अ
स् अस् प्रथमाभया नव वकार
का अकार और अस्का अकार
दोनोंको सवर्णेदीर्घः सूत्र इसक
रके दीर्घभया नव देवास् अस्
प्रथमाभया नव ससोर्विसर्गः इ
सकरके सकोविसर्गहोइगेया
देवासः सिद्धहोइगेया प्रथमे ब्रा
ह्मणासः विज्ञानेलेणा ।
द्वितीयाकिएकवचनविवक्षामे दे

वशाद्रते परे अस् आया देव अस्
इतिस्थिते अम्भसोरस्य समाना
द्रुत्तरस्य अम्भसोरकारस्यलोपो
भवत्यधातोः लोपोभवति कस्य
अकारस्य कयो रम्भासोः कथंभू
तस्य अस्य उत्तरस्य कस्मात्समा
नात् अधातोः समानतेपरे अस्
शस्का यो अकार तिसका लो.
पहोवे धातुतेनहिहोवे ।
समान कोएहृय वकारका अ
कार तिसतेपरे असके अकार
कालोपहोया देवस् इतिस्थिते
नवमोऽनुस्वारः इसकरके मको
अनुस्वारभया देवं सिद्धभया
द्विवचविवक्षामे द्वितीयाका द्वि
वचन औआया देव औ अयमीस्थि

भा॰ तिसइ नव उओ ओ इसकरके ओ
टी॰ हो गेया वकारके शकारकों
ओर ओकारकों देवो सिद्धभेया
द्वितीयाबहुत्वविवक्षामे देव॰
शब्दतें शस आया देव शस् अय
साभेया शकारः शसीति विशेष
णार्थः शकारकि इत्संज्ञालोप
होइगेया प्रयोजन शसि सूत्रके
विशेषणार्थइय देव शस भया
सोनेः शसः पुल्लिंगात्समानाउ
त्तरस्य शसः सकारस्य नकारादे
शो भवति

नकारादेशो भवति कस्य सका
रस्य कस्य सकारस्य शसः कथं
भूतस्य सकारउत्तरस्य कस्मा॰
त्समानात् कथंभूतात्समानात्

अहिंगात्

अहिंगमेविद्यमानयोसमान
तिसेतेंपरे यो शस् तदवयवयो
सकार तिसको न् आदेशहोवे
देव अस् इस अवस्थामे अस्मासे
रस्य इसकरके अकारकालोप
होइगेया फेर सोनः अस इसक
रके शस्के सको न होइगया दे
व न् अयसाभेया शासि शासिप.
रे पूर्वस्य दीर्घोभवति. दीर्घोभ
वतिकस्य पूर्वस्य कस्मिन्परे शा
सिपरे शस्परे होसंतेपूर्वकोदी
र्घहोजावे इसकरके वकारके
अकारको दीर्घहोइगया कोइक
हे शस् कहांहय तो एकदेशवि
कतमनन्यवत् जिसकाएकदेश

भा॰ टी॰ विकृतहोताहय विकारोहानि गर्थिको सोहृसरेकिन्याईनहि॰ होता किंतु उसेकिन्याईहोता॰ हय यदादेशस्तद्वद्भवति यो॰ आदेशजिसकोहोताहय सोति सिकीन्याईहोताहय स्थानिमे योधर्महै सोआदेशमेविहोता हय इनोदोनोंन्यायोंकरकेनु॰ कोंहिंशसमानकरके दीर्घक रके देवान् सिद्धभया तृतीया किपकत्वविवक्षामे देव टा श्रय सीस्थितिहोइ टकारोऽनुबंधः टे न इतिविशेषणार्थः टकारकि इत्संज्ञालोपहोइगया प्रयोजन टेनसूत्रकेविशेषणार्थहय नव देवआ श्रयसिस्थितिभइ ।

देन दालमघघप्नन्नम् इनलमश
थमान्तम् आकारात्परस्यटाइ
नादेशोभवति इनादेशोभवति
कस्य टा कथम्भूतस्य टापरस्य
कस्मादकारात् अकारेतेपरेयो
टानाम टकार इत्संज्ञकआ ति
सको इन आदेश होजावे तब
देव इन अयसिस्थितिभइ तब
अइप इसकरके वकारकाअ॰
कार और इनवाला इकारदोनौं
कौं मिलाइके एकार होइगया
रूपमे मिलिगया देवेनसिद्धभ
या तृतीयाकिद्विवचनमे
भ्याम् आया देव भ्याम् अयसि
स्थितिभई अद्धि अकारस्य आ॰
त्वभवति भकारेपरे आत्वभव

सा॰
टी॰

ति कस्य अकारस्य कस्मिन्परे
भकारे परे भकार परे होसेते अ
कारको आत्व होजावे तब अका
रकौ णत्त्य वकारका अकार
भकार परे कौ णभ्याम् का भका
र तिसके परता अकारको आत्व
होइगया मको मोत्रस्वार इस॰
करके अनुस्वार भया देवाभ्यां
सिद्ध भया । अतः भ्‌ भि अ॰
अकारात्परस्य भिसो भकारस्या
त्वं भवति अकारो भवति कस्य
भकारस्य कथम्भूतस्य भकार
स्य भिसः अकारते परे भिसका
यो भकार तिसको अकार आ॰
देश होजावे । तृतीयाबहुत्व
विवक्षामें देव भिस इति स्थिते

7

नव भको व्यः इसकरके अहो
इगेया नव देव अइस असिश्चि
तिभइ नव अइप् इसकरके अइ
को प होइगेया नव देव पस अ
यसाभेया नव पपेप इसकरे
अकार पकार दोनोंको मिला
इके प होइगेया नव वू पेमेमि
ला देवेस् अयसाभेया नव सो
विसर्गः इसकरके सको विस
र्गो होइगेया देवेः सिद्ध भया ।
अकारस्य भिसि छंदस्यकारोवा
वक्तव्यः छंदसि नाम वेदे अका
रस्य पकारो वानाविकल्पेनव
क्तव्यः अकारोवावक्तव्यः कस्य
अकारस्य कास्मिन्परे भिसिप
रे कास्मिन् छंदसि देव भिसइ

सा॰ टी॰ सञ्चवस्थामे भकारके परला व
कारके अकारको पकार होइ
गेया देवे भिस इस अवस्थामे
सको सोविसर्गः इसकारके ।
विसर्ग होइ गेया देवैभिः सिद्ध
भेया अथसेकोऐभिः जानलेणा
चतुर्थ्येकवचने देव ङे. इतिस्थि
ते ङ.कारो ङित्कार्यार्थः सर्वत्र
ङ.कारसारे ङित्कार्यार्थ जान
णा । ङेरक अकारात्परस्य ङे.
इत्येतस्य अगागमो भवति अका
रते परे यो ङे. तिसको अक् का
आगम होजावे तब ङ.कारो ङि.
त्कार्यार्थः ङ.कि इत्संज्ञालोप
भेया तब प अक अथसा होया
ककि इत्संज्ञालोप होइ गेया ।

टित्किनावायंनयोर्वक्तव्यो इस
करके पको अंतमेअकभया है
व प अ इसअवस्थामे पअयु इस
करके पको अयुभया है व अयु
अ अयसाभया सवर्णेदीर्घः स
ह इसकरके वकाअ और अयु
वाला अ दोनोंको दीर्घभया है
वायु अ यु स्वरहीन अमेमिला
है वाय सिद्धभया है वशाह्नैप
है चतुर्थीकिह्नित्वविवक्षामे ।
भ्याम् आया है व भ्याम् अयसा
भया तव अद्भि इसकरके वेके
अको आत्वहोइगया है वाभ्या
म् मको मोनुस्वारः इसकरके
अनुस्वारहोइगया है वाभ्यां सि
द्धभया चतुर्थीबहुवचने है व

सा॰ भ्यस् अयसा नव एभिबहुत्वे
टी॰ अकारस्यएत्वंभवति मकारे भ
कारेचपरे अकारको एत्वहो
वे मकारेचपुनः भकारपरेहो
मेते नव देवके वकारके अका
रको एहोइगेया देवेभ्यस् स
को रोविसर्गः इसकरके वि
सर्गहोइगेया देवेभ्यः सिद्धभ
या पंचमीकेएकवचनमे देव
ङसि अयस्थितिभइ नव ङ
कि इत्संज्ञालोपभया इकार
वि उच्चारणार्थगेया देव अस्
अयसाभया। ङसिरत् ङसि
षष्ठ्यर्थे प्रथमा अकारान्तपरो ङ
सिरद्भवति अकारतैपरेयोङ
सिनाम ङकार इकार इत्संज्ञ॰
9

कयो अह तिसकौं अंत होजा॰
वे नवग्रह सिद्ध सर्व सावकाशः
इसके सारे अहकौं अंत होइगे
या नव देव अंत अयसा भया ।
नव सवर्णे दीर्घः सह इसकरके
वकार अंत का अ दोनोंकों आ
न भया व् आमे मिला देवान्
सिद्ध भया पंचमी कि छिन विव
नामे देव भ्याम् इति स्थिते नव
अदि इसकरके वके अको आ
त्व होइगेया सकौ मोत्रसार
इसकरके अत्र सार होइगेया
देवाभ्यां सिद्ध भया
पंचमी बहुत्व विवक्षामे देव ।
भ्यस् अयसा भया पश्चिवद्धे
इसकरके अकारको एकार

सा॰ होइगेया सकों सोर्विसर्गः इ
टी॰ सकरके विसर्गा होइ गेया ।
देवभ्यः सिद्ध भया षष्ठीके ए॰
कवचनमे ङस् आया देवङ॰
स् अयसा भया ङ.कार ङि.त्
कार्यार्थं याना रहा देव अस्
अयसा भया ।
ङ.सस्य अकारात्परस्य ङ.॰
सस्य भवति ।
अकारते परे यो ङस् तिस॰
को स्य होजावे ।
तब अस्कों स्य होइगेया

देवस्य सिद्ध भया ।

कुल ८१ पत्र

नं. २

